शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आचार्य रजनीश एवं उनके समकालीन दार्शनिकों का शैक्षिक चिन्तन

मीनाक्षी शर्मा (शोधार्थी)
डॉ. रजनीश शर्मा (शोध निर्देशक)
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाडा, राजस्थान, भारत

"सारी शिक्षा व्यर्थ है, सारे उपदेश व्यर्थ हैं, अगर वे तुम्हें अपने भीतर डूबने की कला नही सिखाते हैं।"

शोध संक्षेप

वैदिक काल से लेकर अब तक भारतीय दार्शनिकों विचारको ने वैयक्तिक, सामाजिक तथा शैक्षिक समस्याओं को लेकर ही चिंतन प्रारम्भ किया तथा मानव जीवन समाज व देश को संतुलन प्रदान करने के उद्देश्य से एक सुसंस्कृत संस्कृति का निर्माण किया। शिक्षा का धर्म, राजनीति और समाज से बड़ा घनिष्ठ संबंध होता है। क्योंकि समाज और संस्कृति दोनों ही परिवर्तनशील हैं, इसलिए शिक्षा भी निरन्तर नवीन विचारधाराओं से प्रभावित होती रहती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य श्री रजनीश के शैक्षिक विचारों जिसमें बालक को महत्वाकांक्षी प्रतियोगिता में आगे निकलने की शिक्षा न देकर विवेकशील बनाने की शिक्षा पर जोर दिया गया है। साथ ही इनके समकालीक दार्शनिक चिंतकों की पृष्ठभूमि में प्रथम पं मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक चिंतन जिसमें आधुनिक शिक्षा चरित्र निर्माण , नैतिक मूल्यों और सभी के लिए शिक्षा व पारंपरिक भारतीय ज्ञान के एकीकरण पर दृष्टि डाली गई है। द्वितीय जे.कृष्णमूर्ति जिन्होंने अपने शैक्षिक दर्शन में सत्य की खोज संबंधी विचार आत्मज्ञान, प्रकृतिवाद, मानवतावाद की व्याख्या कर उनके शैक्षिक दर्शन को स्पष्ट किया है। तृतीय डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों को समाहित किया गया है। चतुर्थ महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक चिन्तन की विवेचना की गई है।

प्रस्तावना

शिक्षा एक अत्यंत व्यापक संप्रत्यय है, जिसे प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक विभिन्न विचारकों, दार्शनिकों, शिक्षा शास्त्रियों ने युग, समय और शैक्षिक परिस्थिति के सापेक्ष समझने और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता को समझाने का प्रयास किया है। शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्र की वह शाखा है, जिसमें शिक्षा के सम्प्रत्ययों, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं शिक्षा संबंधी अन्य समस्याओं के संदर्भ में विभिन्न दार्शनिकों एवं उनके शैक्षिक चिंतन पर प्रकाश डाला गया व वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता बताई गयी है।

हमारे देश में तो प्रारम्भ से ही शिक्षा, धर्म और दर्शन पर आधारित रही है। शिक्षा के निर्माण में दार्शनिकों के विचारों एवं दार्शनिक आधार की भूमिका नींव के पत्थर के रूप में होती है, विशेषकर हमारे भारत देश की शिक्षा में। प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो'ने कहा था - संसार में सबसे श्रेष्ठ और सबसे सुन्दर कोई वस्तु यदि कोई है तो वह है शिक्षा। The Grandest and the most beautiful , the first and fairest thing the best man can ever is the EDUCATION

अध्ययन का उद्देश्य

1 आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

2 आचार्य रजनीश के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

3 महान दार्शनिक मदन मोहन मालवीय, जे.कृष्णमूर्ति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, महर्षि अरविन्द के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन करना।

आचार्य श्री रजनीश

विश्व के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों में भारत के जिन महान् शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों, विचारकों का नाम आदर के साथ लिया जाता है, उनमें आचार्य रजनीश (ओशो) का भी प्रमुख स्थान है। आचार्य रजनीश ने अपने नूतन विचारों से भारत को ही नहीं अपितु पूरे पश्चिम को भी हिला कर रख दिया था। आचार्य रजनीश पश्चिमी विचारकों में सिग्मंड फ्रायड से और भारतीय विचारकों में चार्वाक मुनि से , भगवान बुद्ध एवं भगवान श्री कृष्ण से प्रभावित थे। रजनीश ने अपने जीवन में संपूर्ण विश्व के लगभग सभी महान ग्रन्थों का व्यापक अध्ययन किया। अपनी पुस्तक 'शिक्षा में क्रांति' में शिक्षा एवं इसकी व्यवस्था पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

ओशो के अनुसार शिक्षा का स्वरूप प्रतिस्पर्धात्मक नही होना चाहिए। शिक्षा का यह वर्तमान ढांचा कहीं गलत तो नही है, निश्चित ही यह गलत ढांचा होना चाहिए क्योंकि परिणाम गलत है। परिणाम ही यह बताते हैं कि हम जो कार्य कर रहे हैं वह ठीक है या नहीं। आज की शिक्षा प्रणाली में बालक विकृत मनुष्य होकर निकलते हैं, जिन्हें अपने विवेक का ज्ञान नहीं होता है। हमारी पूरी शिक्षा जिस केन्द्र पर घूमती है वह केन्द्र ही गलत है। जिसके कारण सारी तकलीफ पैदा होती है, वह केन्द्र है 'एम्बीशन'। हमारी सारी शिक्षा एम्बीशन पर घूमती है, महत्वाकांक्षा पर घूमती है। महत्वाकांक्षी शिक्षा की दौड़ में बालक अविवेकी बन रहा है। उसे केवल और केवल आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा में भाग लेना सिखाया जाता है।

ओशो ने शिक्षा को समाज का सबसे सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए उसे समाज के लिए सही अर्थों में स्थापित करने की सलाह दी है। ओशो कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में सब कुछ स्वयं ही सीखना पड़ता है, अपने दीपक स्वयं ही बनना पड़ता है। शिक्षा ऐसी हो जो प्रत्येक व्यक्ति को सब कुछ खोजने के लिए, सीखने के लिए प्रेरित करती हो।

ओशो के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ऐसी शिक्षा प्रणाली का विकास किया जाना चाहिए जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो समाज की हर सत्य बात का समर्थन कर सके तथा समाज के बीच में निडर चट्टान की तरह खड़ा होकर देश तथा मानवता को झकझोरने का कार्य कर सके।

"शिक्षा के स्वरूप को प्रतिस्पर्धा से मुक्त रखकर ही विद्यार्थी में उत्तम संस्कार की संरचना संभव है।"

आचार्य रजनीश प्रकृतिवादी थे। वे बालक का प्राकृतिक विकास, प्राकृतिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे। इनके अनुसार शिक्षा बालकेन्द्रित होनी चाहिए। शिक्षा को इतिहास केन्द्रित बनाने के बजाय भविष्योन्मुखी बनाना चाहिए। आचार्य रजनीश के उपरोक्त विचारों को शिक्षा में उनके महत्वपूर्ण योगदान के रूप में देखा जा सकता है।

पं. मदनमोहन मालवीय

हमारे देश में समय-समय पर अनेकों महापुरूषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में महामना जी का नाम सूर्य की भांति चमकता है। मदनमोहन मालवीय जी बीसवीं शताब्दी के एक महान दार्शनिक समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, धार्मिक सुधारक के साथ-साथ महान शिक्षाशात्री भी थे। महामना जी परम्परावादी व्यक्ति थे। ये ज्ञान की प्राप्ति को ही शिक्षा मानते थे। इनके अनुसार शिक्षा के बिना व्यक्ति को सच्चा ज्ञान नही हो सकता है। ये शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति मानते थे। उनका कहना था कि "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर ना रहे'।"

मालवीय जी ने पुरूषों की शिक्षा से अधिक स्त्री शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया तथा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्रियों की शिक्षा को आवश्यक माना। इसका कारण यह है कि वे ही देश की भावी संतान की माताएं हैं, वे नारियों को इतना सबल बनाना चाहते थे कि वे भारत के पुनर्निमाण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। मालवीय जी शिक्षा को ज्ञान प्राप्ति और व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के विकास का साधन मानते थे।

महामना जी ने शिक्षा को राष्ट्र की उन्नति का अमोघ अस्त्र माना है। उनका सपना था कि देश की आगे आने वाली पीढ़ी भारतीय संस्कृति की परम्पराओं को अपने जीवन में आत्मसात करें। उनका मानना था कि समाज में जितनी भी कुप्रथाएँ व बुराइयां व्याप्त हैं, उनका विशेष कारण समाज के लोगों की अशिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही जनता में ज्ञान का प्रसार होगा।

3 जे. कृष्णमूर्ति

जे. कृष्णमूर्ति एक प्रसिद्ध दार्शनिक शिक्षाविद एवं आध्यात्मिक विषयों के कुशल एवं परिपक्व लेखक एवं प्रवचनकर्ता थे। इनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो, आत्मज्ञान कराये। अन्तः मन का ज्ञान ही शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है।

शिक्षा का अर्थ सत्य की खोज करना, मन को परम्पराओं के बोझ से मुक्त करना, अपने आप को जानना, कार्य को सम्पूर्ण मन, हृदय और प्रेम से करना है। कृष्णमूर्ति जी ने 'लाइफ अहेड' में कहा है, "सम्यक शिक्षा और सम्यक विकास में सीखना सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।" शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेदनशील बनाना है। इनके अनुसार बालकों में प्रकृति और मानव प्रकृति के प्रेम को स्थापित करना है। कृष्णमूति जी यथार्थ ज्ञान के पक्ष में थे और इस सत्य तक पहुंचने का साधन उन्होंने शिक्षा को माना है। इनका मानना था कि सत्य अथवा यथार्थ तक व्यक्ति स्वयं ही अपने प्रयास से पहुंच सकता है न कि किसी व्यक्ति, ग्रंथ या पुस्तक के माध्यम से। यह सब केवल मार्गदर्शन ही कर सकते हैं, प्रयत्न तो व्यक्ति को स्वयं ही करना होगा। कृष्णमूर्ति जी अपने समय की शिक्षा के प्रचलित ढाँचे से सहमत नहीं थे, क्योंकि उनके अनुसार इस शिक्षा प्रणाली में बालकों को केवल ज्ञान अर्जन कराया जाता है, ज्ञान को थोपा जाता है, परन्तु जीवन में आने वाली चुनौतियों, परिस्थितियों में इस ज्ञान का उपयोग करना नहीं सिखाया जाता। प्रचलित शिक्षा बुद्धि का विकास करना नहीं सिखाती। ये ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे जो बालकों में ना केवल ज्ञान का अर्जन कराएं बल्कि संसार की ओर वस्तुगत तरीके से देखना भी सिखाएँ। जिसमें छात्र भौतिक जीवन की समस्याओं का समाधान कर सके।

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों और शिक्षा के स्वरूप की संकल्पना अन्य समकालीन शिक्षाशास्त्रियों से भिन्न है। इनकी शिक्षा प्रणाली के कुछ विशिष्ट अंशो का उपयोग हम वर्तमान शिक्षा में करें तो आगे आने वाली पीढ़ी में नव मानवतावादी एवं परिवर्तनकारी दृष्टि विकसित होगी और एक नवीन भारतीय समाज का निर्माण किया जाना संभव हो सकेगा। उनके शैक्षिक विचारों को वास्तविक जीवन और सामाजिक जीवन में लागू किया जाए तो वर्तमान शैक्षिक परिदृष्य और नव-भारतीय समाज के निर्माण में उक्त शैक्षिक उपादेयता मील का पत्थर साबित होगा।

4 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान शख्सियत थे, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक योगदान दिए। उनके योगदानों के परिणाम स्वरूप उनके जन्म दिवस को सम्पूर्ण भारत वर्ष में 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। ये हिन्दू विचारधारा के महान दार्शनिक और शिक्षाविद् माने जाते हैं, जिन्हें भारतीय संस्कृति का संवाहक भी कहा जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते हैं तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते हैं जो व्यक्ति तथा समाज को प्रगति देता है एवं विकास को गति प्रदान करता है। इनके विचार में ज्ञान व्यक्ति के अन्दर निहित होता है व शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति एवं समाज के संदर्भ में ही है। शिक्षा से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है। शिक्षा प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति का आचरण, विचार तथा व्यवहार सुसंस्कृत हो जाते हैं, जिससे श्रेष्ठ समाज के निर्माण को बल मिलता है।

डॉ.राधाकृष्णन के अनुसार बालकों के लिए शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरन्तर सिखते रहने की प्रवृत्ति है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। 'करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य है।'

5 महर्षि अरविन्द घोष

श्री अरविन्द एक दार्शनिक के रूप में अधिक विख्यात हैं, परन्तु अपने दार्शनिक सिद्धान्तों को मनुष्य जीवन में उतारने के लिए इन्हें विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता अनुभव हुई। इनके शिक्षा संबंधी विचार मुख्य रूप से इनकी पुस्तकें - नेशनल सिस्टम ऑफ एजूकेशन और ऑफ ऐजूकेशन '' में प्रकट हुए। श्री अरविन्द के अनुसार "शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र और संस्कृति को जागृत करती है।'

श्री अरविन्द घोष के लिए वास्तविक शिक्षा वह है जो बच्चे को स्वतंत्र एवं सृजनशील वातावरण प्रदान करती है तथा उसकी रूचियों, सृजनशीलता, नैतिक तथा सौन्दर्य बोध का विकास करते हुए अंततः उसकी आध्यात्मिक शक्ति के विकास को अग्रसरित करती है। एक आदर्शवादी के रूप में अरविन्द घोष के शैक्षिक चिंतन, आध्यात्मिक तपस्या, योग तथा ब्रह्मचर्य के अभ्यास पर आधारित है। इनके अनुसार शिक्षा के चार अन्तः करण होते है, मन, बुद्धि, चिंतन एवं ज्ञान। शिक्षा बालक के चारों स्तर का विकास करके उसे अध्यात्म की और ले जाती है।

श्री अरविन्द ने 'ऐसेज ऑन द गीता भाग -2' में लिखा है "बालक की शिक्षा को उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक अंतरंग और जीवनपूर्ण है उसको व्यक्त करना होना चाहिए। आत्म शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है, विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना शिक्षा नही है। शिक्षा का कार्य मानव के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन करना है।

निष्कर्ष

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है तथा शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास, आवश्यकताओं, समाज एवं राष्ट्र के अनुरूप किया जाता है। ओशो के शैक्षिक चिंतन में छात्र को विवेकशील बनाने के ज्ञान पर प्रकाश डाला गया है, जिससे छात्र अपना मार्गदशर्न स्वयं कर सके। मालवीय जी के शैक्षिक चिंतन में मानवतावादी, यथार्थवादी चिन्तन एवं मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर शैक्षिक प्रक्रिया के विकास एवं जे.कृष्णमूर्ति की शिक्षा के द्वारा बालक की रूचि एवं मानसिक विकास को जोड़कर देखा गया। डॉ. राधाकृष्णन ने छात्रों के लिए शिक्षा को किताबी ना कहकर उसके जीवन संबंधी शिक्षा पर विचार व साथ ही श्री अरविन्द घोष की शिक्षा मनुष्य के अन्तः करण और आत्मज्ञान की शक्ति के निर्माण और विकास की वर्तमान में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया।

संदर्भ ग्रंथ

1 शिक्षा में क्रांति - ओशो, रेबल पब्लिशिंग हाउस, पूना , दसवां संस्करण

2 महामना की झलकियां - पं. पदमकान्त मालवीय, उद्धृत द्वारा डॉ. एस. के पाल, शिक्षा दर्शन, कैलाश प्रकाशन , इलाहाबाद - 2006

3 शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री -एन.आर. स्वरूप सक्सेना, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

4 भारतीय संस्कृति, कुछ विचार, डॉ. राधाकृष्णन, सरस्वती विहार, 21 दयानंद मार्ग, नई दिल्ली 110002, द्वितीय संस्करण 1978

5 शिक्षा क्या है - जे. कृष्णमूर्ति, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी

6 शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री - सिंह ओपी., शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

7 महान शिक्षाशास्त्री - पाण्डेय राम शकल, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा